①

# बचपन की यादों में

~~103~~
~~302~~

543

रात की खुबसूरती में खो गई थी हमारी शेखर। उस खुबसूरती रात को एक ठंठा सा हवा तेज़ी से गले लगाते हुए चली गई। कौन जानती थी कि उस हवा में बसी हुई थी उसकी खोए हुए बचपन की यादों। जिंदगी एक बहुत ~~ब~~लंबा सफर होती है। इस सफर के सबसे श्रेष्ठ और सबसे खुशहाल वक्त है हमारी बचपन। यह एक ऐसा समय है जहां से हम को मिलती है जिंदगी के सबसे खुशी यादों, जिनसे हम अपनी अकेली बुढ़ापन खुशी से रह पाती। शेखर की जिंदगी में भी अंत में सिर्फ अपना कहने केलिए उसकी बचपन की यादों सिर्फ ही था।

शेखर एक गरीब परिवार से आया था। घर के पूरी लोग के विश्वास सिर्फ शेखर पर था, क्योंकि यह बहुत अच्छा से पढ़ती थी। वैसे सब लोगों की विश्वास साक्षात्कार हो गई। शेखर जब बड़े बन गए, उनको समाज की एक ऊँची स्थान पर पर काम मिला। उस काम से वह बहुत कुछ कमाया और धीरे धीरे उसने उसकी घर की गरीबी को ~~हमने~~ हटाया। अब वह ~~एक~~ उस गाँव के सबसे धनिक आदमी है। एक दिन उनको ~~3 एक~~ विदेश में एक अच्छा काम करने की अवसर मिला। धन-दौलत तो उसकी जिंदगी के सबसे बड़ा चीज़ उस समय बन गई थी इसलिए वह इस अवसर नहीं छोड़ा। लेकिन घर लोग उतनी खुश नहीं थी इस बात से। शेखर की बाप तो बहुत पहले ही मर गया था। उनकेलिए अपनी माँ और अपनी बहन थी अपना सब कुछ। वह अपनी जिंदगी में अपनी माँ को बहुत मूल्य देता था। क्योंकि बचपन से वह अपनी माँ की कठिनाईयाँ देखकर आ रही थी, उसी समय से शेखर तय किया था कि जब वह बड़े बन

[illegible]गी तब वह अपनी माँ को खुश रखेगी। लेकिन अब उसकी दिमाक मे बस पैसा कमाने की चिंता था। कह सकती है कि जैसा वह पैसे केलिए कुछ भी करने की मन दिखाने लगी। सब लोग उसकी भलाई चाहती थी और उसकी खुशी, इसलिए कोई इस बात के खिलाफ कुछ नही बोला। जब वह माँ के पास जाकर यह बात बोली तब माँ कहा "बेटा, मेरी खुशी तब है जब तुम खुश हूँ। मुझे पैसो से कोई चाहत नही है। बस तुम खुश रहो। यही मेरी सबसे बडे इच्छा। अगर तुम्हें जाना है तो तुम जाओ मेरा बेटा। मेरी यहाँ सोनु है न? वह मेरी खयाल रखूँगी। लेकिन तुम जल्दी आ जाना ! ठीक है?। वैसे भी मैं तुम्हारी बिना जी नही सकती। बचपन में... "

जब भी माँ कुछ कहने शुरु करती तो जरूर उसके संबंध शेखर की बचपन की कोई घटना भी बोल देती थी। यह तो उसकी आदत ही हो गई। अगर माँ शुरु करती है तो रुकना भूल जाता था। शेखर उसकी इच्छे से विदेश चले गई। अपनी बचपन की मीठे और माधुर्य भरी यादो को यहाँ छोड़कर चली जाने मे उनको थोडा दुख लगा था, लेकिन फिर से उनको पैसे के अद्भुत लोग ज़बरदस्ती से उनको वहाँ से ले गया।

वहाँ जाते ही शेखर अपनी काम पर घुल गई। वह रोज माँ से फॉन में बात करती थी, एकदिन भी वह माँ से बात करना भूला नही था। उनकेलिए अपनी माँ और बहन के अलावा कोई और लडकी नही था और चाहती भी नहीं। एक बारिश की रात। बारिश की प्यारे-प्यारे बूँदे ज़मीन को गले लगाने केलिए जल्दी से आया। उसे बूँदो में है कुछ जादू जिससे धडपने लगी लोगो की दिल अपनी प्यार को ढूँढने केलिए। क्या उस बूँदों में प्यार की अहसास छुपा? शेखर विदेश आकर दो साल आ गई थी। यह तो पहली बार यहाँ बरसात हुई। उनकी दिल उस बारिश

घलने की मन किया। उस बूँदों उसको उसकी दिल को छीन लिया। पहली बार उसकी दिल में प्यार की अहसास धड़कने लगी। बारिश की उस रात को ओर खुबसूरत बनाकर आ गई एक खुबसूरत लड़की, जिनको देखकर धड़कने लगी शेखर की दिल।

उस लड़की का नाम देविका था। वह उस शहर के एक धनिक आदमी के बेटी था। देखने में वह बहुत अच्छा था, लेकिन स्वभाव से वह बहुत बुरा था। उसकी बाप को शेखर बहुत अच्छी लगती थी, देविका तो उसकी बाप की हरेक बात मानती थी। जब एक दिन शेखर उसकी बाप से उसकी दिल की बात कही तो उसका दिल खुशी से नाचने लगी। जैसे सब कुछ अच्छी तरह चल रही थी लेकिन शेखर की माँ तो इसके विरुद्ध था, क्योंकि जब बहन अविवाहित हो तब कैसे भाई की शादी? यह बात से बहुत सारी समस्याएँ है। पहले बहन की शादी केलिए जान पैसा, वह तो शेखर सुधारेंगी लेकिन अगर शादी निश्चय किया तो भी शेखर को वापस जा नहीं सकती क्योंकि उनको बस छह महीने बाद ही अपनी देश जा सकती और यह हो ही नहीं सकती क्योंकि देविका को शादी जल्द ही करना था। और ओर एक समस्या यह है कि बहन की शादी के बाद माँ वहाँ अकेला हो जाएगी। शेखर को कुछ समझ में नहीं आया। वह अंत में बहन की शादी तय किया। वह भी शादी हो जाएगी उसके बिना और उसका और अपनी शादी के बाद वह माँ को विदेश लाने की आयोजन भी किया।

वैसे उसका और बहन की शादी हो गई। देविका का तो शेखर की माँ उतना अच्छी नहीं लगती थी। उसकी कहना यह है कि वह बुढ़िया हमेशा बचपन की बातें करते है, उनका कोई अकलमंदी नहीं है हमेशा यही बात और वह थक गई है यही एक ही बात बार बार सुनकर।

शेखर धीरे- धीरे अब बस उसकी पत्नी की बाते सुनने लगी। अब वह अपनी माँ से रोज़ बात नहीं करती। बस हफ्ते में एक बार फॉन करती। और माँ को यहाँ लाने की उस आयोजन से वह धीरे धीरे हटने लगी। और जब माँ उसे फॉन करती है तब वह कुछ बाते करकर फॉन काट करने लगती है। अकेली माँ ~~के~~ का दिल दुख से भर गई। उसकी दुख सुनने केलिए वहाँ कोई है ही नही।

~~ऐसे चलते एक दिन रहते~~, वह माँ से न बात ~~करते हुए~~ दो हफ्ते हो गई थी वह माँ से बात करते हुए, माँ उससे भी फॉन नहीं किया। जब वह यह बात देविका से कहा तो वह बोली "अगर माँ को तुमसे बात करना हो तो बर वह जरूर फॉन कर देंगे, तू करने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर फॉन किया तो शुरु करने लगे कि बचपन में ऐसे थी वैसे थी, मुझे तो इससे भी ज़्यादा गुस्सा आनेवाली बात है ही नहीं। शेखर देविका की बात सुनकर फॉन नही किया। कुछ देर बाद माध्यम से उन्हें पता लग गया कि ~~उसकी~~ केरला में बहुत बाढ़ हुई और सब जगह में पानी है। जब ओर पढा तो पता लग गया कि उसकी गाँव में पानी भर गई। और लोगो अपनी घर में थक गई है। यह सुनकर शेखर परेशान हो गई और ~~व~~ वह यह बात देविका से कही तो वह बोली "अरे! तुम कितनी बेवकूफ हो। अगर माँ को कोई समस्या हो तो माँ ज़रूर तुझे बुलाऊँगी न? तुम क्यों ऐसे बेकार बातों पर परेशान हो रही है, चल काम केलिए देर हो जा रही है।"

वह फिर से पत्नी की कहने पर माँ की बात भूल गई। वैसे एक महीने चली गई। माँ की कोई कॉल नही है। धीरे- धीरे शेखर को अंदर से कुछ अजीब

लगने लगी। जब भी वह कोई माँ-बेटा को देखती है, तब उसको अपनी बचपन की यादों आती है। छह महीने हो गई है उसकी शादी होकर। वह अपनी देश जाने की ~~निश्चय~~ निश्चय किया। इस बार वह अपनी पत्नी की बात नहीं सुनी।

वैसे अपनी बीते हुए बचपन की यादों ~~कसीदे~~ अपनी घर वापस आने की खुशी में आ रही थी शेखर। खुशी थी एक तरफ और एक तरफ अंदर की अंदर एक ~~एक~~ अहसास- कि शादी के बाद क्या उसने अपनी माँ को उससे अलग रखा था माँ को उसने दुखाया। ऐसे सोचों से पीडित दिल शांत रखने की कोशिश से वह आई अपनी घर की रास्ते में। वहाँ चलकर देखा तो एक पल केलिए वह मर गई, कह सकती है कि एक पल केलिए उसकी साँस नही बंद हो गई। जहाँ उसकी घर था, वहाँ अब कुछ नही है। उसकी आँखों से धीरे- धीरे जैसे बाँध से पानी जब बाहर बहाता है जैसे पानी ~~आ~~ आने लगी। उसकी दिल पूछने लगी "क्या मैं कोई बहुत बडा गलत किया?"

वह उसकी घर की आसपास के घर जाकर पूछा तो पता लग गया कि जैसे वह बाढ ~~क~~ केरल के बहुत सारे लोगों का जीवन लेकर चली गई, जैसे उस बाढ ने उसकी माँ को भी लेकर गई। बाढ के बाद जब देखा तो न ही वहाँ घर बची थी, न उसकी माँ!

शेखर का दिल टूटने लगी। वह खुद से बोलने लगी कि इस गलती को उसे कभी भगवान कभी माँफ नहीं करेगी। अगर दुनिया में बेवकूफ अगर हो तो ~~उ~~ वह ही होगा दुनिया का सबसे बडा बेवकूफ, जो अपनी पत्नी की बेकार बात सुनकर उसकी साथ लिया। जिस माँ ने मुझे जन्म लिया, जिस माँ को वह अपनी पूरी

जिंदगी मानती थी, वह अब इस दुनिया में नहीं है सिर्फ उसकी वजह से। वह चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगी। उस दिन केरला एक बेटा ओर बाढ की सामनो किया। एक बेटा का पछतावा हुए, ~~रोने का बाढ~~ दिल की अंदर से आँसू की बाढ। जिसको बंद करना कोई नाविकसेना से या किसी से भी नहीं सकती।

जब वह ~~आकर~~ अपनी घर की स्थान पर आई थी तब उसको ~~मन~~ अपनी माँ की सान्निध्य महसूस करने लगी। जिसकी वजह से उनको अपनी माँ ~~का~~ खोया उसको वह अपनी जिंदगी से अलग कर दिया। देविका को उसने उसकी जिंदगी से हटाया। अपनी माँ की यादों बसती हुई गाँव जाकर वहाँ रहने की आयोजन शेखर ने लिया। जब वह अपनी माँ घर की स्थान पर गई, वहाँ उसे उसकी बचपन की एक खिलाफ मिल गई। उसको देखकर ही वह अपनी बचपन की यादों में खुल गई। उसकेलिए अपना कहने केलिए सिर्फ उसकी माँ था। जिसको उसने ही इस लोग से दूर चलाया। अब वह अकेली है। माँ अब बचपन की कहानीयाँ उसे सुनाने केलिए कोई नहीं है। अब माँ उसकी उसकी साथ जिंदा है बस उसकी बचपन की यादों में......